Krishna Nand B.A I Hons ① Freud का सिद्धांत (continue)

रूप से वर्णन करता है। इसे ही पश्चात विस्तारण कहते हैं। फ्रॉयड के अनुसार स्वप्न के समाप्त हो जाने के बाद व्यक्ति अर्धचेतन अवस्था में रहता है और इस अवस्था में अहं (ego) स्वप्न की असंबद्ध और बिखरी हुई कड़ियों में अपनी ओर से कुछ बातें जोड़कर या घटाकर उन्हें व्यवस्थित, सार्थक, और तर्कसंगत बना देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वप्न की उपर्युक्त पाँच रचनाओं के से स्वप्न का गुप्त या अव्यक्त "व्यक्त विषय" के रूप में प्रकट होता है। यही कारण है कि स्वप्न की रचनाओं के वास्तविक अर्थ को समझना कठिन है।

मूल्यांकन (Evaluation)

फ्रॉयड के सिद्धांत का मूल आधार मानसिक संघर्ष एवं दमन की क्रिया है। जिसकी अभिव्यक्ति स्वप्न की रचनाओं के रूप में होती है। अतः स्वप्न सार्थक एवं महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इनके विश्लेषण से व्यक्ति के अचेतन के भाव, संवेग, इच्छा, विचार इत्यादि को जाना जा सकता है।

इस सिद्धांत की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। स्वप्न अचेतन में दमित इच्छाओं को छद्म रूप में प्रकट करता है। इससे व्यक्ति की कुंठाओं, निराशाओं या अतृप्त इच्छा-प्रवाहों का स्वाभाविक रूप से निष्कासन हो जाता है और व्यक्ति विसंतुलित होने से बच जाता है। इस प्रकार स्वप्न व्यक्ति के लिए हितकारी होता है।

फ्रॉयड ने स्वप्नों के विश्लेषण के लिए एक अत्यंत ही सुविधाजनक, उपयुक्त एवं वैज्ञानिक

Krishna Nand B.A I Hon's (2) Freud का सिद्धान्त
(Continue)

विधि बतलाई है। इस विधि का उपयोग कर स्वप्न की घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करने की दिशा में फ्रॉयड का विशेष योगदान रहा है।
इस सिद्धांत की उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद कुछ मनोवैज्ञानिक, विशेषकर युंग (Jung) एवं एडलर (Adler) ने इसकी कड़ी आलोचना की है।

फ्रॉयड ने अपने सिद्धांत में काम संबंधी दमित इच्छाओं पर बहुत अधिक बल दिया है। ~~हलां~~ हलांकि फ्रॉयड ने 'काम' शब्द का उपयोग अत्यंत ही व्यापक अर्थ में किया है, फिर भी सभी स्वप्नों में कामुक इच्छाओं की ही अभिव्यक्ति होती है- ऐसा कहना उपयुक्त नहीं है। युंग के अनुसार व्यक्ति के अचेतन में अनेक वैयक्तिक, सामाजिक एवं पूर्वजों के संस्कार से संबद्ध विचार दमित रहते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति स्वप्न के माध्यम से होती है तथा इनका काम-संबंधी इच्छाओं से कोई संबंध नहीं रहता है।

फ्रॉयड ने स्वप्न को अतीत की घटनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बतलाया है पर युंग ने स्वप्न की घटनाओं का संबंध अतीत वर्तमान और भविष्य तीनों कालों से बतलाया है।

फ्रॉयड के सिद्धांत की आलोचना उनके प्रतीकों की व्याख्या के ~~संदर्भ~~ में संदर्भ में की जाती है। फ्रॉयड के अनुसार प्रतीक सार्वजनीन होते हैं। पर युंग ने प्रतीकों को व्यक्तिगत माना है।

फ्रॉयड का स्वप्न-सिद्धांत असामान्य व्यक्तियों के स्वप्नों के विश्लेषण पर आधृत है अतः इस सिद्धांत के आधार पर सामान्य व्यक्ति के स्वप्नों का विश्लेषण करना उचित प्रतीत नहीं होता है।
फ्रॉयड के सिद्धांत की आलोचना का यह भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है।